JPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.029

मेरठ एवं सहारनपुर मंडल में स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन

डॉ0 आलोक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
गोचर महाविद्यालय, रामपुर मनिहारन, सहारनपुर
ईमेलः aloketah383@gmail.com

सारांश

अंग्रेज सरकार के बंगाल विभाजन के निर्णय ने न सिर्फ बंगाल के बल्कि पूरे देश के प्रबुद्धजनों को उद्वेलित किया। सरकार के निर्णय का विरोध करने के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया गया। कालान्तर में स्वदेशी और बहिष्कार का तरीका गांधी जी भी अपनाते हैं। मेरठ और सहारनपुर मण्डल के जनपदों में लोगों ने स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन बढ़–चढ़कर भाग लिया। बुलन्दशहर, खुर्जा, मुजफ्फरनगर, गाज़ियाबाद, मेरठ, सहारनपुर, हापुड़ में विदेशी वस्तुओं का विक्रय बन्द कर दिया गया। विदेशी वस्तुओं का प्रयोग न करने के आव्हान का लोगों ने खुले मन से स्वागत किया तथा स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग प्रारम्भ किया। जिससे फिरंगी सरकार को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ी और स्वदेशी उद्योग–धंधे फलने–फूलने लगे।

मुख्य शब्द

फिरंगी, बहिष्कार, स्वदेशी, बंगाल विभाजन, प्रबुद्धजन।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 01/09/25
Approved: 20/09/25

डॉ0 आलोक कुमार

मेरठ एवं सहारनपुर मंडल में स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन

RJPP Apr.25-Sept.25,
Vol. XXIII, No. II,
Article No. 29
Pg. 219-224
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.029

मेरठ एवं सहारनपुर मंडल के अन्तर्गत सम्मिलित जनपद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, मरेठ, बागपत, हापुड़, बुलन्दशहर, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर जनपद शामिल है। 1857 मे देश को फिरंगियों से मुक्त कराने का प्रथम प्रयास की शुरूआत 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से हुई। मेरठ में विद्रोह के प्रस्फुति होने का समाचार सहारनपुर में 12 मई को पहुँचा।[1] सहारनपुर में गूजरों, रांघड़ों ने फिरंगियों और उनके आश्रित जमीदारों और महाजनों पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये।

मेरठ तथा सहारनपुर मंडल के लोगों ने ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीतियों के विरूद्ध आवाज़ उठाई। जगह–जगह पर जलूस–प्रदर्शन और हड़तालों को सफल बनाया गया। 10 मई 1857 को प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन की शुरूआत मेरठ से होती है। क्रांति का यह सफर केवल यहीं तक नहीं ठहरा। बल्कि मेरठ अनेक आन्दोलनों का केन्द्र बना। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, जवाहरलाल नेहरू, सरदार, वल्लभ भाई पटेल, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन, मौलाना, अबुल कलाम आज़ाद, आचार्य कृपलानी, गोपाल कृष्ण गोखले, जयप्रकाश नारायण, रामनोहर लोहिया, सम्पूर्णानन्द, राजाराम शास्त्री, मोहन लाल गौतम से लेकर विभिन्न क्रान्तिकारी नेता मेरठ पहुँच कर विदेशी दासता से मुक्ति के लिए प्रेरित करते रहे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में बुलन्दशहर का योगदान अविस्मरणीय है। जिले में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, उत्तर प्रदेश के गर्वनर के बुलन्दशहर आगमन पर "गर्वनर वापिस जाओं" के नारे लगाये गये। सत्याग्रह और नमक आन्दोलन में भी जनपद की सक्रिय भागीदारी रही। 3 नवम्बर को गाँधी जी के सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर और खुर्जा आगमन ने सम्पूर्ण जनपद के स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रेरित किया। सिकन्दराबाद की जनता ने 1600 रूपये, बुलन्दशहर की जनता ने 4000 रूपये और खुर्जा की जनता ने 3600 रूपये की धनराशि अर्पित कर अपनी देश भक्ति का परिचय दिया। बुलन्दशहर के स्वतंत्रता सैनानी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत होकर देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य करते रहे।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मुजफ्फरनगर के स्वतन्त्रता सैनानियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। नमक आन्दोलन में स्त्री, पुरूष, बच्चे, किसान, व्यापारी, हिन्दू मुसलमान सभी ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। सुमत प्रसाद जेन लाला अम्बा प्रसाद, रघुनन्दन स्वामी, वैध इशानन्द, सरकार सिंह वानप्रस्थी, चौधरी बलवन्त सिंह आदि लोग गिरफ्तार हुए। डीएवी कॉलेज के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान देशभक्ति का परिचय दिया। जेल गये तथा जेल में यात्नाएँ सहीं। जनपद की महिलाओं ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुजफ्फरनगर से आज़ाद हिन्द फौज में वीर सैनानी भर्ती हुए जिनमें हरी सिंह, लाल सिंह, बिशन सिंह, रघुवीर सिंह, ओमप्रकाश, मुंशी सिंह आदि थे। जनपद में अछूतोद्धार शुद्धि और जनकल्याण के कार्य लागू किये गये।

गाजियाबाद का स्थान राष्ट्रीय आन्दोलन में अग्रणी रहा। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय यहाँ लोगो ने पुलिस की यात्नायें और जेल की कठोर सजा भुगतनी पड़ी। परन्तु वे पुलिस के समक्ष झुके नहीं और अपने आन्दोलन को अधिक तीव्र कर दिया। इस आंदोलन में पिलखुवा के लाला भगत प्रसाद कंसल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। दासना के श्रीराम अग्रवाल जिन्हें लोग डिक्टेटर कहते थे, ने अपने अन्य देशभक्त साथियों के साथ जनसमुदाय का नियंत्रित किया। हापुड़ के गाँधीगंज में

एक विशाल जलसा गाजियाबाद में तैयार किये गये नमक की पुड़ियों को सार्वजनिक नीलाम करके नमक कानून तोड़ा गया। इसका नेतृत्व श्री लीलाधर कर रहे थे। स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले और कठोर सजा पाने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों में भगत सिंह आत्मज श्री कौर सिंह, श्याम सिंह, श्री मोजा, श्रीमती अंगूरी देवी, अतर सिंह चौधरी, अनूप सिंह, उदय सिंह, करन सिंह, इन्दर, किरन देवी, श्री हरिवंश आदि प्रमुख रहे। गाज़ियाबाद में महिलाओं, विद्यार्थियो, कृषकों और मजदूरों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मेरठ की आहूतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। मेरठ क्रान्तिकारियों का गढ़ रहा। रास बिहारी बोस का मेरठ से सम्बन्ध रहा। मेरठ की महिलाओं की असहयोग तथा विदेशी वस्त्रों की बहिष्कार नीति पर 'लीडर' नामक अखबार ने लिखा महिला सत्याग्रह समिति मेरठ द्वारा प्रभावकारी ढंग से संगठित करने के परिणाम स्वरुप लगभग सभी हिंदू व्यापारियों और कुछ मुस्लिम वस्त्र विक्रेताओं ने विदेशी वस्त्रो का विक्रय बंद कर दिया। यहाँ की जनता ने सामाजिक कार्यों में सक्रिय योगदान दिया।

स्वामी विवेकानंद मेरठ में लगभग पाँच माह रहे इस दौरान उन्होंने राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्र चिंतन और राष्ट्र समर्पण के लिए लोगों को जागृत किया और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का संकल्प लिया।

1905–06 में कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में प्रस्ताव पास हुआ जिसमें विदेशी वस्तुओं के प्रयोग ना करने का आह्वान देशवासियों से किया गया इस प्रस्ताव का मेरठ की जनता ने खुले मन से स्वागत किया राष्ट्रीय स्तर के नेताओं की अपील पर हजारों लोग इस आंदोलन में शामिल हुए उन्होंने स्वदेशी के प्रयोग की शपथ लेकर इस दिशा में काम शुरू कर दिया।[2]

1907 ई० में गोपाल कृष्ण गोखले मेरठ पहुंचे वहां मेरठ के लोगों से मिले मेरठ का जनमानस गोपाल कृष्ण गोखले के आगमन से प्रफुल्लित था उन्हें खुली बाजी में बैठकर पूरे नगर में भ्रमण कराया इससे राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति लोगों में नई चेतना आई।[3]

1909 ई० के दौर में ऑल इंडिया लीग की एक शाखा मेरठ में स्थापित हुई। रास बिहारी के नेतृत्व में मेरठ क्रांतिकारियों का गढ़ बन गया। वॉयसराय लोर्ड होडिंग पर 27 दिसंबर 1912 को दिल्ली में बम फेंका गया था। रासबिहारी का नाम इस घटना से जुड़ा। इसके बाद भी वह मेरठ आते रहे। मेरठ अंग्रेजों की छावनी थी। 1915 में सशस्त्र क्रांति के प्रमुख सूत्रधार विष्णु गणेश किंगले को 10 बमों के साथ गिरफ्तार किया गया।[4]

1919 में अंग्रेजी सरकार ने रॉलेट एक्ट पास किया। इस कानून को गांधी जी ने 'काले कानून' की संज्ञा दी। लोक भाषा में इस कानून का अर्थ था ना वकील, ना दलील, ना अपील। देश भर में इस कानून का विरोध हुआ। 6 अप्रैल 1919 को मेरठ के छात्रों ने सार्वजनिक हड़ताल बुलाई। 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला नरसंहार ने छात्रों के आंदोलन में आग में घी डालने का काम किया। यह हड़ताल दो हफ्ते चली। जिलाधिकारी ने धारा 144 लागू करने का आदेश दिया। किसी भी क्षेत्र में आम जनसभा करना प्रतिबंधित कर दिया गया। आदेश में नगर पालिका क्षेत्र में सभा करना प्रतिबंधित था। यहां के नेताओं ने नगर पालिका क्षेत्र के बाहर सूरजकुंड पर जनसभा की। मेरठ के

जनमानस ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफत नीति का विरोध किया।[5] अली बंधु को बड़ी धूमधाम के साथ जुलूस के रूप में मेरठ के विभिन्न स्थानों पर घुमाया गया।

अस्पर्श्यता निवारण कार्यक्रम के संबंध में मेरठ में 19 20 फरवरी 1928 में अछूतोंदार सम्मेलन हुआ स्वदेशी एवं कड़ी प्रचार में भी मेरठ पीछे नहीं रहा पंडित गौरी शंकर ने 1926 में मजदूर आश्रम स्कूल खोला जिसमें कटाई बुनाई संबंधी समस्त सुविधाएं प्रदान की गई 3 मार्च 1928 को मेरठ के बाजारों में विदेशी वेस्टन की होली जलाई गई।

मेरठ देश का एक ऐसा स्थान है जो आजादी के संघर्ष से लेकर अंतिम तक का साक्षी रहा देश में जितने भी आंदोलन हुए मेरठ की जनता ने हर आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया 1857 की क्रांति का आरंभ मेरठसे हुआ था और स्वतंत्रता से ठीक पहले 1946 में कांग्रेस का अधिवेशन भी मेरठ में हुआ।

1905 के बाद स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव में हरिद्वार के आर्य समाजियों ने स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने की शपथ ली थी। अंग्रेज सरकार इस विद्यालय को राजद्रोह संस्था समझती थी और इस अज्ञात खतरे का मूल मानती थी।

1913 में पश्चिमोत्तर प्रदेश के लेफ्टिनेंट गवर्नर जेम्स मेस्टन गुरुकुल का निरीक्षण करने के लिए बाये। उन्होंने यहाँ कुछ आपत्तिजनक नहीं पाया और अपने भाषण में कहा, "न केवल इस प्रान्त में, अपितु सारे भारत में गुरुकुल एक बिल्कुल मौलिक और कौतुहलपूर्ण परीक्षण है। मैं यहाँ आकर उन लोगों से भी मिला जिन्हें सरकारी रिपोर्ट में रहस्यमय और खतरनाक बतलाया गया है।

गुरुकुल काँगड़ी के समान ही 1907 में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर स्थापित हुआ जिसे स्वामी दर्शनानन्य ने स्थापित किया था।' राष्ट्रीय जागृति और राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्यसमाज की इस संस्था ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इस प्रकार 1902 के बाद स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के प्रवर्तक के साथ–साथ सहारनपुर जनपद के राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय जागरण के प्रमुख नेता बन गये। उन्होंने 1909 में आर्य कन्या पाठशाला सहारनपुर की सभा में भाषण करते हुए कहा, "ज्ञान भय का सबसे बड़ा उपचार है। स्त्रियों को ज्ञान दो और उन्हें भयमुक्त कर उनके अन्दर निर्भीकता प्रवाहित होने दो।" उनके प्रभाव से सहारनपुर में नारी जागरण प्रारम्भ हुला बऔर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए नारियाँ सामने आयी।

स्वदेशी आंदोलन के मध्य जब कांग्रेस के गरम दल के नेता लोकमान्य तिलक को 1908 ईस्वी में गिरफ्तार कर लिया गया और कॉलेज दल के प्रमुख नेता लाला लाजपत राय आदि जब विदेश चले गए तो महात्मा श्रद्धानंद ने सरकारी दमन से आर्य समाज को बचाने के लिए पंजाब तथा अन्य स्थानों के आर्य समाजों ने स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था ने केवल दृढ़ता से सामना किया बल्कि सरकार से यह कहलाने में भी सफलता पाई कि आर्य समाज देशद्रोही संस्था नहीं है।

प्रथम विश्व युद्ध के समय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एवं एनी बेसेंट ने होम रूल लीग की स्थापना की और औपनिवेशिक स्वराज की मांग रखी उत्तर प्रदेश होम रूल लीग के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष तथा सहारनपुर के बैरिस्टर बोमन जी इसके मंत्री चुने गए जवाहरलाल नेहरू को संयुक्त मंत्री बनाया गया वह मांझी के नेतृत्व में सहारनपुर में होम रूल लीग का कार्यक्रम चला रहा होम रूल आंदोलन में लालता प्रसाद अख्तर और उनके साथ ही सक्रिय रहे।

रोलेट एक्ट के विरोध में सहारनपुर शहर में सोम प्रकाश वकील के नेतृत्व में एक प्रस्ताव पास किया गया और शहर के सभी दुकानें एवं व्यापारिक संस्थान बंद रहे सहारनपुर में आंदोलन का संचालन बैरिस्टर बोमनजी कर रहे थे उनकी अध्यक्षता में जुबली पार्क में एक आम सभा हुई जिसमें 6000 व्यक्ति उपस्थित थे।[7]

खिलाफत के प्रश्न ने सभी मुसलमान को एक मंच पर ला खड़ा किया सहारनपुर में अप्रैल 1919 से पूर्व ही खिलाफत की गतिविधियां प्रारंभ हो गई हिंदू और मुसलमान एक साथ मिलकर इस आंदोलन को चला रहे थे।

देहरादून भी सहारनपुर का ही एक भाग था। यहाँ पर भी लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। श्री नरेन्द्र देव शास्त्री ने 1916 में देहरादून में जनता को जागृत करने के लिए अपना कार्यक्रम बनाया। 1920 में देहरादून में हुए जिला सम्मेलन में इन्हें स्वागत अध्यक्ष चुना गया। 1921 में देहरादून में स्वदेशी आंदोलन प्रारम्भ हुआ। गांधीजी भी यहाँ 1929 में उत्तर प्रदेश की यात्रा करते हुए आये। देहरादून में सत्याग्रह, धरना, हड़ताल की गयी। यहाँ के स्वतंत्रता सैनानियों को जेल भेजा गया तथा उन्हें कठोर दण्ड दिया गया। यहाँ के प्रमुख सत्याग्रहों में नरेन्द्र शास्त्री, महावीर त्यागी, खड़क बहादुर सिंह, चौधरी बिहारी लाल, मास्टर रामस्वरूप आदि प्रमुख थे। देहरादून के आंदोलनों की यह विशेषता रही की ये सदैव अहिंसक रहे तथा जनता ने सदैव खादी, स्वदेशी अपनाना और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का पालन किया।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय राजनीति में कुशल, प्रभावशाली, जनप्रिय, नेतृत्व के महत्व को समझा। भारतीय जनमानस के राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर से राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने के लिए, राष्ट्र के नायकों का गौरव गान किया। शिवाजी ऐसे ही राष्ट्र नायक थे। तिलक ने गणेश उत्सव के द्वारा सामाजिक चेतना को उभारकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जोड़ दिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी अपनाने का प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा भारतीयता की भावना को जागृत करना, अस्पृश्यता आंदोलन के द्वारा सामाजिक एकता स्थापित करना आदि ऐसे प्रयास थे जिनसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन सशक्त हुआ। मेरठ और सहारनपुर मंडल की जनता ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार स्वदेशी वस्तुओं के अपने पर बल दिया उन्मूलन राष्ट्रीय शिक्षा पर बल तथा अन्य जनहित के कार्यक्रमों को अपनाया तथा राष्ट्रीय आंदोलन मे बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

फिरंगियों की दासिता से मुक्ति पाने के लिए मेरठ एवं सहारनपुर मण्डल के निवासियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया गया तब इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर विदेशी वस्तुओं का

प्रयोग त्याग दिया गया और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग प्रारम्भ किया जिससे फिरंगी सरकार को आर्थिक हानि हुई तथा स्वदेशी उद्योग–धंधे मज़बूत हुए। इस दौरान स्वदेशी शिक्षा के प्रसार पर भी बल दिया गया और इस क्षेत्र में अनेक स्वदेशी शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई।

सन्दर्भ

1. जी० एस० सरदेसाई : न्यू हिस्ट्री ऑफ दि मराठास, पृ० सं०–407
2. कृष्णचन्द्र शर्माः महाराष्ट्र मानस, पृ० सं०–49
3. वही।
4. वही
5. वही
6. डा० राजेन्द्र प्रसादः इंडिया डिवाइटेड, पृ० सं०–98–99, बम्बई 1947
7. द सत्याग्रह मूवमेन्ट, सहारनपुर पुलिस रिपोर्ट, फाइल सं० 262 (27)